

7585. R. 3, 22, 39. ÇĀK. 1. KUMĀRAS. 3, 59. Nārājaṇa's HARIV. 11300. — c) ein Rudra; daher im pl. zur Bezeichnung der Zahl elf ÇAUT. 40. — 3) f. ईशा Vermögen, Gewalt, Herrschaft: ईशा वशस्य या ज्ञाया AV. 11, 8, 17. 9, 25, 10, 2. स देवानामीशा पर्येतस ईशानो ऽभवत् 15, 1, 5. VS. 21, 57. मामे ऽद्येशायां वात्सर्गत् ÇAT. Br. 5, 3, 1, 13. सह एवेशामारणानां पशूनामवरुन्दे 12, 7, 2, 8. — Vgl. अनीश, नितोश, लोकेश, वितेश, वेदेश.

ईशत् n. VET. 3, 19 = ईशित.

ईशन (wie eben) n. das Gebieten, Herrschen: य ईशे ऽस्य जगतो नित्यमेव नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय ÇVETĀÇV. UP. 6, 17. ईशनी 3, 1 fehlerhaft für ईशनी.

ईशय् (von ईश), ईशयति = ईषमत्तमाचष्टे oder करोति VOP. 21, 14.

ईशाखि (ई° + स°) m. Çiva's Freund, ein Bein. Kuvera's H. 189.

Vgl. MBH. 3, 15887.

ईशा f. 1) s. u. ईश. — 2) = ईषा (s. d.).

ईशाध्याय (ई° + अध्याय) m. = ईशापनिषद् COLEBR. Misc. Ess. I, 39.

ईशान und ईशानै (partic. von ईष्) 1) adj. subst. a) zu eigen habend,

besitzend; vermögend: ईशानं राय ईमेहे RV. 6, 54, 8. राधसः 53, 2. पितृ-

वित्तस्य रायः 1, 73, 9. वस्वः 7, 6, 4. 7, 7. स नो राधास्या भूशानः 13, 11.

ईशानाय प्रेङ्क्षति यस्तु घ्नान् 90, 2, 5. 6. मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान् श्रोत्रेता

4, 173, 4. वे श्र्य श्राकृत्वानि भूरीशानास्तु श्रा जुहुयाम नित्यां da wir es

vermögen 7, 1, 17, 16. ईशानाः पिप्यत धियः 5, 71, 2. ईशानो यवया वधम्

1, 8, 10. स ईशानो घनदा श्वस्तु मन्त्रम् AV. 3, 15, 1. ऊधो दिव्यस्य नो धातु-

रीशानो वि ष्या दतिम् 7, 18, 1. 9, 2, 3. तासामीशानो भगवः पराचीना मु-

खा कधि VS. 16, 53. भूतभव्यस्य ÇAT. Br. 14, 7, 2, 18. अमृतत्वस्य ÇVETĀÇV.

UP. 3, 15. mit dem acc.: सुनिर्मलामिमो प्राप्तिमीशानः 12. — b) beherr-

schend, Herrscher: ईशानं जगत्तस्तुष्ट्युपस्पतिम् RV. 4, 89, 5. 7, 32, 22. ई-

शानादस्य भुवनस्य भूरेः 2, 33, 9. ÇAT. Br. 5, 4, 4, 12. स हि राजेशानो ऽधि-

पतिः 14, 9, 2, 10. — 2) m. a) der Herrscher, Gebieter, einer der älteren

Namen des Çiva-Rudra AK. 4, 1, 4, 26. H. 193. 169. MED. n. 40. AV.

15, 1, 5. भव शर्वं पशुपति उग्र रुद्र मरुदेव ईशान 5, 1, fgg. 14, 10. VS. 24,

28. शर्व ईशान मरुदेव उग्र 39, 8. रुद्र सर्व (sic) पशुपति उग्र अशनि भव

मरुदेव ईशान ÇAT. Br. 6, 1, 2, 10—17. कुराय मृडाय शर्वाय शिवाय भवाय

मरुदेवायैमाय भीमाय पशुपतये रुद्राय शंकरायेशानाय स्वाहा ĀÇV. GĀH. 4,

9. KAUC. 116. रुद्र, वरुण, सोम, रुद्र, परान्य, यम, मृत्यु und ईशान sind die

Kshattria unter den Göttern ÇAT. Br. 14, 4, 2, 23. — MBH. 3, 8169. 8836.

15887. KUMĀRAS. 7, 56. KATHĀS. 10, 32. 23, 81. RĪGĀ-TAR. 1, 38. 3, 366.

DEV. 8, 23. ein Rudra VP. 58. die Sonne, als eine der acht Formen

(मूर्ति) Çiva's ÇKDR. (SMṚTI und ĀGAMA). ein Sād hja HARIV. 11335. ein

Bein. Vishṇu's MBH. 1, 22. — b) N. pr. eines Mannes RĪGĀ-TAR. 2, 82.

Verz. d. B. H. No. 398. — 3) f. ईशानी ein Bein. der Durgā DEV. 8, 21.

— 4) m. f. (°नी) N. einer Pflanze (s. शमी) RĪGĀN. im ÇKDR. — 5) n.

Licht, Glanz MED. n. 40.

ईशानकृत् (ई° + कृत्) adj. handelnd wie Einer, der es vermag; seinen

Besitz oder seine Macht gebrauchend: त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि

सत्य ईशानकृत् RV. 8, 79, 2. यो विद्या भुवनानि मन्वेन ईशानकृत् प्रवया अय-

र्वधत 2, 17, 4. स हि धीमहिर्दिव्यो अस्त्युग्र ईशानकृत् मरुद्वि वृत्रतूर्य 6, 18, 6.

8, 54, 5. 4, 61, 11. 64, 5. VĪLAKH. 4, 5.

ईशानचन्द्र (ई° + च°) m. N. pr. eines Arztes RĪGĀ-TAR. 4, 216.

ईशानज (ई° + ज°) m. pl. eine bes. Ordnung von Göttern, die eine Unterabtheilung der Kalpabhava bilden, H. 93. ईशानस्य इन्द्रस्य निवास ईशानः कल्पः । तत्र ज्ञाता ईशानज्ञाः Sch.

ईशानदेवी (ई° + दे°) f. ein Frauennamen RĪGĀ-TAR. 1, 122. 4, 212.

ईशावास्य n. = ईशापनिषद् (die mit jenen Worten beginnt) COLEBR.

Misc. Ess. I, 59. 91. 326.

ईशितर (von ईष्) nom. ag. Herr, Gebieter AK. 3, 1, 10. H. 339. न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके न चेतिता ÇVETĀÇV. UP. 6, 9. विश्वेशितर und ईशितर PRAB. 108, 15 (vgl. Schol. 2).

ईशितव्य part. fut. pass. von ईष् P. 5, 4, 54, Sch.

ईशिता (von ईशिन) f. = ईशित ÇABDAR. im ÇKDR.

ईशित्व (wie eben) n. Herrschaft MBH. 14, 1053. die Herrschaft über die Wesen, eine der acht Kräfte, auf denen Çiva's Oberherrschaft beruht, H. 202.

ईशिन (von ईष्) 1) adj. gebietend, herrschend: विंशतीशिन der über zwanzig (Dörfer) gebietet M. 7, 116. — 2) f. °नी Herrscherkraft: य एको जालवानिषिते इशनीभिः (sic) सर्वोद्धोक्कानिषित ईशनीभिः (sic) ÇVETĀÇV. UP. 3, 1. इशनीभिः 2.

ईशापनिषद् f. N. einer nach dem Anfangsworte (ईशा) benannten Upanishad WEBER, Lit. 103. fg. 112.

ईश्वर (von ईष्) P. 3, 2, 175 (ईश्वर UP. 5, 57). VOP. 26, 156. 1) adj. f. आ

vermögend Etwas zu thun oder zu werden: मा मा किंसिपुरीश्वराः AV.

7, 102, 1. mit folg. gen. des infin. (P. 3, 4, 13). vermögend, im Stande zu

thun, — zu werden, d. h. ausgesetzt (einem Zufall u. s. w.); häufig steht

im Veda der nom. m. sg. ohne Rücksicht auf genus und numerus

des subst., zu welchem ईश्वर gehört. सैनमीश्वरा प्रदक्षः TS. 2, 1, 4, 1. य

ईश्वरो वाचो वदतिः सन्वाचं न वेदत् 2, 6. ईश्वरो सर्वमायुरेतेः AIT. Br. 8,

7. ÇAT. Br. 12, 4, 3, 4. 5, 1, 14. fgg. 13, 3, 3, 5. अथ यदुच्चैः कीर्तिपेदीश्वरो

कृत्य वाचो रत्नभाषो जनिताः AIT. Br. 2, 7. ते केत ईश्वरो गृहा यजमान-

स्य तं प्रयत्नमु प्रद्योतोस्तस्येश्वरः कुलं विज्ञोद्धोः ÇAT. Br. 1, 1, 2, 22. त-

स्येश्वरः प्रजा पापीयसी भवितोः 5, 1, 4, 9. यो ऽग्निं चिनुत ईश्वर आर्तिमतिः

10, 1, 4, 13. mit dat. des infin. ईश्वरो जनयितवै 14, 9, 4, 13. fgg. mit dem

inf. (auf tuṃ): राज्ये वापि मकाराजो मां वासयितुमीश्वरः R. 2, 101, 21. HIT.

II, 157. KUMĀRAS. 4, 11. DEV. 1, 64. mit यद्: ईश्वरो क यतधैव स्यात् ÇAT.

Br. 2, 1, 4, 19. mit Auslassung von यद् 14, 4, 2, 1, 4. 12, 4, 4, 4. — 2) m.

f. (°री) Herr, Gebieter, Fürst, König AK. 3, 1, 10. TRIK. 3, 3, 330. H. 339.

an. 3, 523. MED. r. 117. mit gen. oder loc. P. 2, 3, 39. VOP. 5, 29. गवाम्

oder गोषु Sch. सर्वस्येश्वरः AV. 11, 4, 1. 19, 6, 4. 53, 8. लोकेश्वर ÇAT. Br.

14, 7, 2, 24. (ब्राह्मणः) ईश्वरः सर्वभूतानाम् M. 1, 99. BHAG. 4, 6. तामीश्वरं

प्राप्य (लङ्का) R. 3, 41, 8. राज्यमस्तमितेश्वरम् RAGH. 12, 11. मण्डलस्य AK.

2, 8, 4, 3. कोशलेश्वर RAGH. 3, 5. कुरिताम् der Weltgegenden 30. त्रिदेश्वर N.

4, 31. रानसे° Hip. 3, 1. करो° R. 1, 1, 66. करी° PANĀT. II, 73. सर्वे°

HIT. 27, 7. कच्छपे° VID. 194. लोकानां सर्वेयामीश्वरी भव R. 5, 25, 5. तेषां

तमीश्वरी सीते मम चैव भवेश्वरी 3, 61, 29. 6, 7, 17. अहंकारममितारमी-

श्वरम् M. 1, 14. तमीश्वराणां परमं मरुद्वरं तं देवतानां परमं च देवतम् । प-

तिं पतीनाम् ÇVETĀÇV. UP. 6, 7. सिध्यति कर्मसु मरुत्स्वपि यन्निषोड्याः सं-

भावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम् ÇĀK. 163. Landesfürst, König M. 4, 153.

9, 278. ein hochstehender, vornehmer, reicher Herr RAGH. 3, 16. ईश्वराणां